(9) राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद्–नैक (National Assessment and Accreditation Council–NAAC)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NPE-1986) में महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, उच्च शैक्षिक संस्थानों, दूरस्थ शिक्षा संस्थानों व विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े अन्य स्वायत्तशासी संस्थानों के निष्पादन के मूल्यांकन हेतु एक स्वायत्तशासी संस्था की स्थापना का जो संकल्प लिया गया था उसी के परिणामस्वरूप इस विचार को साकार रुप प्रदान करने के लिये भारत सरकार ने यू०जी०सी० के तत्वावधान में 16 दिसम्बर 1994 को एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (NAAC) का गठन किया। इस संस्था का प्रधान कार्यालय बंगलौर (कर्नाटक) में है। सुविधा की दृष्टि से सहज रूप में 'राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद्' (National Assessment and Accreditation Council) को नैक (NAAC) शब्द से सम्बोधित किया जाता है।

नैक : दृष्टि (NAAC : Its Vision)

नैक की दृष्टि है—*"To make quality the defining element of higher education in India through a combination of self and external quality evaluation, promotion and sustenance initiatives."*

नैक : लक्ष्य (NAAC : Its Mission)

नैक का मुख्य लक्ष्य देश भर में संचालित उच्च शिक्षा से सम्बन्धित समस्त शैक्षिक संस्थानों की गुणवत्ता, संवर्धन तथा उनका मूल्यांकन एवं प्रत्यायन करना है।

संक्षेप में, नैक के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

(1) उच्च शैक्षिक संस्थानों या उनसे सम्बद्ध संस्थानों एवं विशेष एकादमिक कार्यक्रमों एवं प्रोजेक्ट्स आदि के समयबद्ध मूल्यांकन एवं प्रत्यायन की व्यवस्था करना।

(2) उच्च शैक्षिक संस्थानों में शिक्षण-अधिगम तथा शोध में गुणात्मक वृद्धि की दृष्टि से शैक्षिक माहौल को सम्पन्न बनाना।

(3) उच्च शिक्षा में आत्म-मूल्यांकन, जवाबदेही, स्वायत्तता, शोध आदि पहलूओं को प्रोत्साहित करना।

(4) उच्च स्तरीय शोध कार्यों, विचार-विमर्श, प्रशिक्षण कार्यक्रमों में रुचिपूर्वक पहल करना।

उच्च शिक्षा से सम्बन्धित दूसरे अभिकरणों (Stake holders) के साथ गुणात्मक मूल्यांकन, बेहतरी एवं स्थिरता हेतु मिल-जुलकर कार्य करना।

नैक की कार्यप्रणाली (Value Frame Work of NAAC)

नैक की कार्यप्रणाली अधोलिखित बिन्दुओं पर केन्द्रित रहती है—

(1) शैक्षिक संस्थानों को उनकी स्थिति से अवगत कराना।

Scanned by TapScanner

(2) शैक्षिक परिसर वातावरण को उन्नत बनाना।

(3) शिक्षकों एवं छात्रों को शिक्षण की आधुनिक एवं नूतन आयामों के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करना।

(4) संस्था की गुणवत्ता से समाज के लोगों को अवगत करना। साथ ही, उन्हें संसाधनों, विभिन्न योजनाओं आदि से भी परिचित कराना।

(5) संस्थान की Intra-Inter अन्तःक्रियाओं को प्रोत्साहन देना।

साथ ही, नैक कार्य प्रारूप में अधोलिखित मुख्य मूल्यों को उच्च शिक्षा संस्थानों में समाहित करने पर भी बल दिया गया है, जो इस प्रकार हैं—

(1) राष्ट्रीय विकास में योगदान देना।
(Contributing to National Development)

(2) छात्रों में आज के वैश्विक दौर में प्रतिस्पर्धा की भावना जागृत करना।
(Fostering Global Competencies among Students)

(3) छात्रों में अपेक्षित मूल्य विकसित करना।
(Inculcating a Value System in Students)

(4) तकनीकी के प्रयोग को बढ़ावा देना।
(Promoting the Use of Technology)

(5) जीवन में श्रेष्ठता पाने की चाह या लालसा।
(Quest for Excellence)

नैक की आवश्यकता एवं महत्व (Need and Importance of NAAC)

नैक प्रक्रिया किसी भी संस्थान के शैक्षिक स्तर (Quality Status) की जांच करने के लिये अपनायी जाती है। प्रत्ययन रिपोर्ट बताती है कि परिषद् द्वारा स्थापित विभिन्न मानकों पर संस्थान कितना खरा या पूर्ण उतरता है। ये मानक है—पाठ्यक्रम, शिक्षण-अधिगम, मूल्यांकन, फैकल्टी, शोध एवं विकास, इन्फ्रास्ट्रक्चर (संसाधन), अधिगम स्रोत, संस्थान प्रबन्धन, वित्तीय स्तर एवं छात्र हित आदि। भारतीय उच्च शिक्षा में संस्थानों की संख्या अत्यधिक है। आज देश में लगभग 350 विश्वविद्यालय हैं तथा 18,000 कॉलिज। नैक द्वारा निर्धारित कसौटी पर खरे उतरने पर ही UGC इन संस्थानों को 'Potential for Excellence' का प्रमाणपत्र प्रदान करती है जो संस्थान का स्तर निर्धारित करता है तथा जिसके आधार पर ये संस्थान सीधे तौर पर नैक प्रक्रिया में भाग ले सकते हैं। सम्बद्ध कॉलेजों में स्थिति थोड़ी भिन्न है। इनमें स्तर की दृष्टि से पर्याप्त भिन्नता होती है। कुछ तो शैक्षिक गुणवत्ता की दृष्टि से बहुत निम्न स्तर पर दिखलाई पड़ते हैं। इसीलिये नैक प्रक्रिया को पूरा करने के अन्तर्गत विभिन्न पहलूओं से गुजरना पड़ता है जो एक प्रारूप में नैक द्वारा संस्थान को उपलब्ध कराया जाता है।

निःसंदेह नैक उच्च शिक्षा के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका अपने जन्म से ही निभाती चली आ रही है और यही कारण है कि शिक्षा जगत से जुड़े सभी लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने में यह संस्था सफल रही है।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नैक के योगदान को अधोलिखित बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है—

(1) उच्च शैक्षिक संस्थानों के मूल्यांकन एवं प्रत्यायन हेतु एक सर्व-सम्मत तरीका विकसित करना।

(2) अपनी विविध गतिविधियों के माध्यम से सम्पूर्ण देश में उच्च शिक्षा के प्रति गुणात्मक सोच उत्पन्न करके।

(3) सम्पूर्ण देश के लगभग 2700 संस्थानों का सितम्बर 2005 तक सफलतापूर्वक नैक का आयोजन करके।

Scanned by TapScanner

(4) जिन संस्थानों का नैक हो चुका है उन्हें Post प्रत्यायन के लिये IQACs (Internal Quality Assurance Cells) के लिये प्रोत्साहित करके।

(5) नैक प्रक्रिया में कुछ नये प्रयोगों को अपनाना जैसे—बेलड्रीज मॉडल (Baldrige Model), On-line Quality Assurance, E-assessment तथा पुनः प्रत्यायन के लिये कसौटी निर्धारित करना आदि।

ये सभी चीजें आज भारतीय उच्च शिक्षा का एक अभिन्न अंग बन गई हैं। यह इसलिये भी और महत्वपूर्ण है क्योंकि नैक इन आधारों के बल पर ही देश में 'Quality Culture' विकसित करने में सफल हो पाई है। नैक अपनी कार्यशैली में जिन पंक्तियों को आदर्श मानकर चलती है वह है—"Small is Beautiful"। इन सभी आधारों पर विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि नैक देश की भविष्य की आशाओं पर भी पूर्ण उतरेगा तथा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सार्थक योगदान देगा। लेकिन इस राह में नैक के समक्ष चुनौतियां भी कम नहीं हैं जिन पर सफलतापूर्वक विजय प्राप्त कर ही वह अपने लक्ष्य पर पहुँच पायेगी।

नैक निष्पादन मूल्यांकन की कसौटी (Its Criteria)

उच्च शिक्षा संस्थानों के निष्पादन मूल्यांकन के लिये नैक (NAAC) ने जिन मानकों अथवा कसौटियों का निर्धारण किया है, वे निम्नलिखित हैं—

(1) पाठ्यक्रम सम्बन्धी पहलू (Curricular Aspects)
(2) शिक्षण-अधिगम एवं मूल्यांकन (Teaching-Learning and Evaluation)
(3) अनुसंधान, परामर्श एवं विस्तार (Research, Consultancy and Extension)
(4) अधोसरंचना एवं अधिगम संसाधन (Infrastructure and Learning Resources)
(5) छात्र सहयोग एवं प्रगति (Student Support and Progression)
(6) संगठन एवं प्रबन्धन (Organisation and Management)
(7) स्वस्थ परम्पराएं (Healthy Practices)

उपरोक्त सातों कसौटियों से सम्बन्धित नैक (NAAC) ने एक प्रोफार्मा (Proforma) भी तैयार किया है जो संस्थानों को उपलब्ध कराया जाता है तथा इसी के आधार पर नैक इन शिक्षा संस्थानों का मूल्यांकन एवं प्रत्यायन कर उन्हें ग्रेड (Grade) प्रदान करता है जो संस्थान की गुणवत्ता का द्योतक माना जाता है।

Scanned by TapScanner